सल्तनत कालीन उपलब्धियां

अध्ययन के बिंदु

- प्रशासनिक संरचना।
- सैन्य व्यवस्था।
- न्याय व्यवस्था।
- राजस्व व्यवस्था।
- व्यापार तथा वाणिज्य।
- भाषा एवं साहित्य
- संगीत कला।
- चित्रकला।
- स्थापत्य कला

प्रशासनिक संरचना

- सल्तनत कालीन प्रशासनिक संरचना मुख्यता अरबी फारसी पद्धति पर आधारित थी किंतु सैन्य संगठन तुर्क मंगोल पद्धति से लिया गया । हिंदुओं की भू राजस्व पद्धति को भी कायम रखा गया इस प्रकार प्रशासनिक संरचना मिश्रित थी
- केंद्रीय शासन का प्रधान सुल्तान था। राज्य का सर्वोच्च संचालक, न्याय अधिकारी ,कानून का सूत्रधार और सेनाओं का प्रधान सेनापति था।

- सुल्तान सभी विभागों तथा राज्यों की प्रत्येक शाखा का स्वयं संचालन करता था। मंत्री का एक वर्ग उसकी सहायता करता था। मंत्री अपने-अपने विभागों के प्रभारी होते थे किंतु उनकी नीति सदैव सुल्तान द्वारा निर्देशित व शासित होती थी।
- सल्तनत के प्रशासन में चार प्रमुख मंत्री होते थे
- दीवाने विजारत
- दीवान ए अर्ज
- दीवान ए इंशा
- दीवान ए रिसालत

- राज्य का प्रधानमंत्री वजीर कहा जाता था और उसका कार्यालय दीवाने विजारत (राजस्व विभाग) विभाग कहते थे
- आरिज ए ममालिक का मंत्रालय दीवाने आरिज कहलाता था।यह सेना का प्रधान रक्षा मंत्री होता था इसका मुख्य कार्य सैनिकों की भर्ती ,उनके वेतन का निर्धारण और वितरण, सैनिक एवं घोड़ों का हुलिया संबंधी रिकॉर्ड,सैनिक अभियानों का आयोजन और सेना का निरीक्षण करना होता था

- दीवान ए इंशा यह शाही पत्र व्यवहार का मंत्रालय था जिस का संचालन दबीर नामक सचिव करते थे। इस विभाग का प्रधा न दवीर ए मुमालिक होता था ।यह मंत्रालय का काम शाही घोषणाओं का प्रारूप तैयार करना, शासकीय घोषणाओं को जारी करना ,प्रांतीय गवर्नर, अधिकारी आदि को पत्र भेजना था ।
- सुल्तान के शाही फरमान इसी मंत्रालय से जारी होते थे

- दीवान ए रिसालत या विदेश मंत्री था इसका मुख्य कारण विदेशी वार्ता और कूटनीतिक संबंधों की देखभाल करना था।
- यह काजी के फैसले के विरूद्ध अपील को भी सुनता था

- काजी उल कुजात यह न्याय विभाग का प्रधान था।
- सद्र उस सुदूर यह धार्मिक विभाग का प्रधान था इस्लाम धर्म के कानूनों का प्रचार प्रसार करना उनका पालन कराना और मुसलमानों के विशेष हितों । की सुरक्षा का दायित्व इसी पर था।

- प्रांतीय सरकार केंद्रीय सरकार की प्रतिमूर्ति और कार्य संचालन हेतु उसमें भी वही विभाग होते थे जो केंद्र सरकार के थे किंतु दोनों के पदनाम एक जैसे नहीं होते थे ।
- प्रांत के गवर्नर या अक्ता को प्रधान , वली ,नाजिम नायक कहा जाता था

- सल्तनत के विस्तार के कारण प्रांतों को जिलों में बाटा बाटा गया इन्हें शिक कहा जाता था।
- शिको की स्थापना बलवान ने की थी शिकों का शासक शिकदार कहा जाता था

- जिलों को परगनो में बांटा गया था प्रत्येक परगने में आमिर एवं मुंसिफ जैसे अधिकारी होते थे|
- आमिर मुख्य प्रशासनिक अधिकारी तथा मुंसिफ राजस्व विभाग का प्रधान होता था

- शहर या 100 गांव के एक समूह का शासक अमीरे सदा होता था।
- शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम होती थी जो स्वशासन और पैतृक अधिकारियों की व्यवस्था के अंतर्गत होती थी।
- गांव के मुख्य अधिकारी पटवारी(लेखाकार),चौधरी खुत, मुकद्दम(,मुखिया) जो प्रशासन को लगाम वसूलने में मदद करते थे।

सैनिक संगठन

- तुर्की शासन व्यवस्था में सैनिक संगठन का विशेष महत्व था।
- तुर्की और मंगोल पद्धति पर आधारित था।
- सल्तनत कालीन सुल्तान में बलवान को सैन्य विभाग की स्थापना का तथा अलाउद्दीन खिलजी को एक स्थाई सेना के गठन का श्रेय दिया जाता है।
- सेना के मुख्य तीन भाग थे- घुड़सवार सेना, गज (हाथी) सेना, पैदल सेना

- सैन्य वर्गीकरण दशमलव प्रणाली के आधार पर किया गया।
- सबसे छोटी सैनिक इकाई सरखेल तथा सबसे बड़ी सैनिक इकाई खान होती थी खान के ऊपर सुल्तान होता था।

1. सरखेल 10 घुड सवार की टुकड़ी का प्रधान।
2. सिपहसालार 10 सरखेल।
3. अमीर 10 सिपहसालार।
4. मलिक 10 अमीर ।
5. खान 10 मलिक।
6. सुल्तान 10 खान

- सैनिकों का वेतन नगद नहीं दिया जाता था बल्कि उन्हें इसके बदले एक्ता प्रदान की जाती थी।
- अलाउद्दीन ने एक स्थाई सेना का गठन किया सैनिकों की सीधी भर्ती की तथा उन्हें सरकारी खजाने से नगद वेतन दिया ।
- अलाउद्दीन खिलजी ने घोड़ों को दागने की प्रथा प्रारंभ की जिससे उनकी अदला-बदली को रोका जा सके।
- फिरोजशाह तुगलक ने सैनिकों के पद को वंशानुगत बना दिया उसने सेना में दास की भर्ती करना प्रारंभ किया

न्याय एवं दंड व्यवस्था

- मुस्लिम कानून के चार स्रोत हैं कुरान, हदीस, इजमा तथा कयास।
- कुरान मुस्लिम कानूनों का प्रमुख स्रोत है।
- हदीस में पैगंबर की कथन एवं कार्यों का उल्लेख है।
- इजमा इस्लामिक विद्वानों द्वारा की गई व्याख्या
- कयास अर्थात तर्क अथवा विश्लेषण के आधार पर कानून की व्याख्या

- सामान्य कानून- यह कानून केवल मुसलमानों के ऊपर ही लागू होते थे।
- देश का कानून- देश का कानून स्थानीय कानून होता था तथा उसका आदर किया जाता था ।
- फौजदारी कानून -यह कानून हिंदू तथा मुस्लिम दोनों के लिए बेराबर था

राजस्व व्यवस्था

- इस्लामी अर्थव्यवस्था संबंधी सिद्धांत का अबू याकूब द्वारा लिखित किताब उल खराज में लिखे गए है।
- सल्तनत काल में पांच प्रकार की कर थे-

1. उसर
2. खराज
3. खुम्स।
4. जजिया।
5. जकात

- उसर मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर 5% से 10% तक ।
- खराज गैर मुसलमानों पर भूमि का 1/3 से 1/2 तक।
- जकात मुसलमानों पर धार्मिक कर दो से ढाई प्रतिशत तक और यह उन्हीं की भलाई के लिए खर्च किया जाता था।
- जजिया गैर मुसलमानों पर लगाए जाने वाला कर
- खुमस लूट का माल 1/5 राज्य का 4/5 सैनिकों का

- सल्तनत काल में कृषि योग्य भूमि को कर निर्धारण की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया गया।
- खालसा जो भूमि केंद्रीय सरकार के नियंत्रण में थी जिससे वसूल किया जाने वाला लगान को सीधे केंद्रीय खजाने में जमा किया जाता था।
- एक्ता जिसको राज्य द्वारा नगर वेतन के बदले में सैनिक तथा स्थानीय अधिकारियों को तथा अमीरों को आवंटित किया जाता था।

- सल्तनत काल में भू राजस्व निर्धारण के मुख्य तीन तरीके प्रचलित थी

1. बटआई जिसमें वास्तविक उपज में से राज्य के हिस्से का निर्धारण किया जाता था ।
2. मसाहतइसमें भूमि की पैमाइश के आधार पर उपज का निर्धारण किया जाता था इस प्रणाली को अलाउद्दीन खिलजी ने प्रचलित किया।
3. मुक्ताई यह लगान निर्धारण की एक मिश्रित तरीका थी यह हिस्सा बांट प्रणाली पर आधारित था।

उद्योग एवं व्यापार

- सातवीं शताब्दी से 10 वीं शताब्दी तक भारत तथा अरब के मध्य व्यापारिक संबंधों का स्वर्ण काल था।
- मोहम्मद बिन तुगलक का काल व्यापारिक गतिविधियां का स्वर्ण काल था।
- विदेशों से घोड़े, अस्त्र-शस्त्र ,दास, सूखे मेवे फल इत्यादि आयात किया जाता था।
- लोहा एवं हथियार,सूती वस्त्र ,नील, जड़ी-बूटी, मसाले शक्कर, आदि निर्यात किए जाते थे

मुद्रा

- मोहम्मद गौरी के सिक्कों पर उसका नाम तथा दूसरी ओर देवी लक्ष्मी की आकृति अंकित है।
- मोहम्मद बिन तुगलक में एक सोने का सिक्का चलाया जिसे इब्नबतूता दिनार कहता है।
- फिरोज तुगलक ने तांबे और चांदी के मिश्रित सिक्के चलाए।

भाषा और साहित्य

- दिल्ली सल्तनत का काल साहित्यिक दृष्टि से मध्यम था।
- फारसी और संस्कृत भाषा के अतिरिक्त हिंदी उर्दू और प्रांतीय भाषाओं में ग्रंथ लिखे गए।
- अमीर खुसरो की प्रमुख रचनाएं- तुगलकनामा, तारीखें अलाई ,खजाइन उल फुतूह
- जियाउद्दीन बरनी की रचना तारीख ए फिरोजशाही तथा फतवा ए जहां दारी।
- मिनहाज उस सिराज तबकात ए नासिरी

- बलवन का पुत्र मोहम्मद तथा अलाउद्दीन ने अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान अमीर खुसरो तथा अमीर हसन देहलवी को संरक्षण प्रदान किया।
- मोहम्मद बिन तुगलक के समय में बदरुद्दीन मोहम्मद फ़ारसी का श्रेष्ठ कवि था।
- फिरोज तुगलक ने अपनी आत्मकथा लिखी तथा इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी को संरक्षण दिया

संगीत कला

- इस्लाम धर्म में संगीत वर्जित था परंतु भारतीय संगीत ने तुर्की शासकों पर प्रभाव डाला जिसके फलस्वरूप बलवन उसका पुत्र बुगरा खा, अलाउद्दीन खिलजी, मोहम्मद बिन तुगलक जैसे सुल्तानों ने संगीत को संरक्षण प्रदान किया।
- तुर्क उसको अपने साथ ईरान तथा मद्धेशिया अरबी संगीत परंपरा साथ लाए।
- साथ ही रबाब और सारंगी और इनकी एक विशिष्ट संगीत पद्धति थी।

- मध्यकालीन संगीत परंपरा के आदी संस्थापक अमीर खुसरो थे ।
- सर्वप्रथम उन्होंने भारतीय संगीत में कव्वाली गायन को प्रचलित किया।
- आमिर खुसरो को सितार तथा तबले के निर्माण का भी श्रेय दिया जाता है। हसन देहलवी को उसकी उच्च गजलों के कारण भारत का सी दी कहा जाता है

चित्रकला

- माननीय या अन्य किसी जीवित प्राणी के चित्र रूढ़िवादी मुसलमानों को स्वीकार नहीं थे।
- प्रारंभिक मुसलमान सुल्तानों ने चित्रकला के प्रति रुचि नहीं दिखाई।
- सल्तनत कालीन चित्रकला के प्रचलन का सबसे प्रमुख उल्लेख बैहाकी द्वारा लिखित गजनबी यों के इतिहास में मिलता है।
- इल्तुतमिश के समय चीन इतिहासकार दिल्ली आए

स्थापत्य कला

- कला एवं स्थापत्य के क्षेत्र में हिंदू इस्लामी संस्कृति के मध्य समन्वय अधिक स्पष्ट दिखाई देता है।
- तुर्क ने हिंदू अलंकरण के नमूने जैसे घंटियों के नमूने बेल के नमूने, स्वास्तिक तथा कमल आदि का प्रयोग किया ।
- इस्लामी परंपरा की सबसे प्रमुख विशेषता मेहराव व गुंबद का प्रयोग है

- भारत में पहली तुर्क मस्जिद कुवत उल इस्लाम जिसे कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1197 में बनवाया जो पहले जैन तथा बाद में विष्णु मंदिर था।
- 1200 में कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर में अढ़ाई दीन का झौंपड़ी नामक मस्जिद का निर्माण कराया ।

- सूफी संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1197 में कुतुब मीनार की स्थापना की किंतु इसे 1232 में इल्तुतमिश ने पूरा कराया

- मकबरा निर्माण शैली का जन्मदाता इल्तुतमिश को माना जाता है सुल्तान गढ़ी मकबरा प्रथम सल्तनत कालीन मकबरा था |
- बलवान ने अपना मकबरा और लाल महल बनवाया शुद्ध इस्लामी पद्धति पर निर्मित यह भारत का प्रथम मकबरा था

- अलाउद्दीन खिलजी एक महान निर्माता था उसने सीरी महल तथा हजार स्तंभों वाला महल का निर्माण कराया तथा कुतुब मीनार के निकट अलाई दरवाजा बनवाया।

- तुगलक शासकों की स्थापत्य में समकालीन राजनीतिक अस्थिरता और आर्थिक समस्या की झलक मिलती है इन शासकों की इमारतें अत्यधिक अलंकरण तथा विशाल भवन एवं अत्यंत सादे ढंग की है।
- फिरोज़ शाह तुगलक ने हौज खास नामक पहाड़ी पर अपना और अपने प्रधानमंत्री खाने जहां तेलंगानी का मकबरा बनवाया यह दिल्ली में निर्मित प्रथम अष्टभुजा कार मकबरा है

- लोदी काल में मकबरों को ऊंचे चबूतरे पर बनाया जाता था तथा कुछ मकबरे उद्यानों के मध्य में बनाए गए।
- सिकंदर लोदी के समय में एक गुंबद के स्थान पर दो गुंबदों का निर्माण होता था।
- लोधी काल को मकबरों का काल भी कहा जाता है